[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 7104 **L**

Unique Paper Code : 2133100030

Name of the Paper : Theory of Editing Manuscripts

Name of the Course : **B.A. (Honours) Sanskrit, DSE**

Semester : VIII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Unless otherwise required in a question answers should be written either in Sanskrit or in Hindi or in English, but the same medium should be used throughout the paper.
3. Attempt **all** Questions.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. अन्यथा आवश्यक न होने पर, इस प्रश्नपत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।
3. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रन्थ एवं गुप्त लिपियों के ऐतिहासिक विकास, उनकी प्रमुख विशेषताओं तथा पांडुलिपि-परंपरा में उनके प्रयोग का क्रमबद्ध विश्लेषण कीजिए। 18

Systematically analyse the historical development of Brahmi, Kharoshthi, Granth and Gupta scripts, their salient features and their use in the manuscript tradition.

अथवा/Or

पांडुलिपियों के वर्गीकरण के मानदंडों (आकार, संरचना, चित्रांकन, पंक्ति-विन्यास आदि) का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट कीजिए कि ये मानदंड पाठ-समझ एवं संपादन-प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

Analyse the criteria for classification of manuscripts (size, structure, illustration, line arrangement, etc.) and explain how these criteria affect the process of reading comprehension and editing.

2. "कोई भी पांडुलिपि अंतिम सत्य नहीं होती"-पाठांतर (Variants) की समस्या के संदर्भ में इस कथन का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। 18

"No manuscript is the final truth"-Critically analyse this statement in the context of the problem of variants.

अथवा/Or

पांडुलिपि-लेखन में होने वाली त्रुटियों के स्वरूप एवं उनके उत्पन्न होने के कारणों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

Describe in detail the nature of errors in manuscript writing and the reasons for their arising.

3. सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में पांडुलिपि संरक्षण एवं संपादन के विकसित होते आयामों की समालोचनात्मक समीक्षा कीजिए। 18
Critically review the evolving dimensions of manuscript preservation and editing in the age of information technology.

अथवा/Or

विषय-संबंध (Subject relation) के आधार पर पाठांतरों के संपादन में आने वाली जटिलताओं का समाधान कैसे किया जाता है? विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

How are the complexities of editing translations based on subject relation resolved? Explain in detail.

4. पांडुलिपियों के आलोचनात्मक संपादन (Critical Edition) की आवश्यकता एवं महत्व का विवेचन कीजिए। 18

Discuss the need and importance of critical editing of manuscripts.

अथवा/Or

पाठालोचन को "वैज्ञानिक पद्धति" कहने की सीमाएँ क्या हैं? दार्शनिक दृष्टिकोण से विवेचन कीजिए।

What are the limitations of calling Pathalochan a "scientific method"? Analyze from a philosophical point of view.

5. पांडुलिपियाँ केवल पाठ-संरचनाएँ नहीं, अपितु सांस्कृतिक-स्मृति, ज्ञान-परंपरा एवं बौद्धिक इतिहास की जीवित अभिव्यक्तियाँ हैं।" इस कथन का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए। 18

Manuscripts are not just textual structures, but living expressions of cultural memory, knowledge tradition and intellectual history. Present an analysis of this statement.

अथवा/Or

"आलोचनात्मक संस्करण का निर्माण केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि नैतिक उत्तरदायित्व से जुड़ा बौद्धिक कर्म है।" इस कथन के आलोक में संपादक की नैतिक जिम्मेदारियों की समालोचना कीजिए।

"The creation of the critical version is not just a technical process, but an intellectual act associated with moral responsibility. In the light of this statement, critique the editor's ethical responsibilities.